ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-1 No. 3 January–December 2020

# बदीउज्जमाँ के उपन्यास 'छाको की वापसी' में विभाजनोपरान्त विस्थापन के अन्तर्द्वन्द्व से जूझते पात्रों का यथार्थ

**Dr. Pardeep Kumar P.E.S.-I**

**1* Dr. Pardeep Kumar, Principal, Ludhiana**

**शोध सारांश** :– 19वीं और 20वीं शताब्दी के पूर्वाद्ध काल के उपन्यास, हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच बढ़ता आपसी तनाव, बदीउज्जमाँ के उपन्यास 'छाको की वापसी' में विभाजनोपूर्व और विभाजनोपरान्त साम्प्रदायिकता की समस्याओं से जूझते पात्रों का प्रस्तुतीकरण किया जाना। औपन्यासिक पात्रों का विभाजनोपरान्त पूर्वी और पश्चिमी पाकिस्तान में विस्थापित होना, पात्रों का पीड़ित यथार्थ बदीउज्जमाँ द्वारा पेश करना। देखा–देखी में मुसलमानों का अपने अरमानों के देश पाकिस्तान में जाना। अपने धर्म के लोगों के बीच छाको की मोहभंग की स्थिति का उत्पन्न होना। हिन्दुस्तान से जन्नत की तलाश पर निकले मुसलमानों के टूटते सपनों का यथार्थ समझाना। अपने सहधर्मियों और मज़हब के लोगों के बीच पहुँच कर छाको का देशकाल, भाषा, संस्कृति और तद्युगीन परिदृश्य से न जुड़ पाने की समस्या का अंकन करना। उस पार गए मुसलमानों को जन्नत की प्राप्ति का न हो पाना। छाको को अपने ही मज़हब के लोगों के बीच परायापन महसूस होना। पाकिस्तान में हिन्दुस्तान से विस्थापित हुए, मुसलमानों को द्वितीय दर्जे की नागरिकता का अधिकार मिलना। पीड़ित पात्र छाको का भेदभाव, अजनबीपन और मुहाजिरपन का शिकार होना। छाको का घर वापसी के लिए विवश होना। छाको की घर वापसी के आड़े में अन्तर–राष्ट्रीय कानून का आना। छाको का खाज़े बाबू से घर वापसी के लिए गोहार लगाना। अन्तर–राष्ट्रीय कानून के अनुसार छाको का पाकिस्तानी नागरिक पाया जाना। छाको की घर वापसी का रास्ता खोजने में खाज़े बाबू का असफल होना। अब्दूश्शकूर उर्फ छाको और अन्य पात्रों की अन्तर्द्वन्द्व की पीड़ा का


Copyright © 2020 Authors

यथार्थ बदीउज्जमाँ द्वारा प्रस्तुत किया जाना। छाको जैसे पात्रों की विभाजनोपरान्त विस्थापन की समस्या का पीड़ित यथार्थ लोगों के समक्ष लेकर आना ही इस शोध–पत्र का ध्येय है।

**बीजशब्द** :– भारत का विभाजन और पाकिस्तान का नवनिर्माण, छाको का पाकिस्तान जाना, छाको के मोहभंग पर घर वापसी की गोहार, छाको, पैरी, जनवा उर्फ जैनब, रामजनी, ढल्लन सिंह, महम्दू ख़लीफ़ा, साहेबजान, छोटी–अम्मा और अब्बू , फरजंद दादा, हबीब भाई और गाँधी भाई का विभाजनोपरान्त विस्थापन के अन्तर्द्वन्द्व से उत्पन्न पीड़ित यथार्थ ।

**प्रस्तावना** :– समाज के संघर्षों, जटिलताओं, आकांक्षाओं, समस्याओं एवं अन्तर्विरोधों का कलात्मक ढंग से साहित्यिक विधा में प्रस्तुतीकरण करने का माध्यम है, 'उपन्यास'। समाज की यथार्थवादी परम्परा का प्रतिनिधि बन कर 'उपन्यास' जीवन के अन्तर्द्वन्द्वों को जनमानस के सामने लेकर आता है। बदीउज्जमाँ के उपन्यास 'छाको की वापसी' के औपन्यासिक पात्र संकट से जूझते, अपने अन्तर्द्वन्द्व के यथार्थ को शब्दों के कमाल से प्रस्तुत करते हैं। 19वीं और 20वीं शताब्दी के पूर्वाद्ध में हिन्दुओं और मुसलमानों के बीच बढ़ते आपसी तनाव को बदीउज्जमाँ ने 'छाको की वापसी' उपन्यास में बखूबी प्रस्तुत किया है। बदीउज्जमाँ ने विभाजनोपरान्त अन्तर्द्वन्द्व की समस्याओं से जूझते पात्रों का प्रस्तुतीकरण किया हैं। यहां पर अन्तर्द्वन्द्व से अभिप्राय है, ''वह स्थिति जब मन में ऐसे विचार उत्पन्न होते हो जिनमें परस्पर विरोध और संघर्ष महसूस होता है''।[1] सच पूछो, तो बदीउज्जमाँ ने अन्तर्द्वन्द्वों और अन्तर्विरोधों का साहित्यिक सलीके से यथार्थ छाको जैसे पात्र के माध्यम से बेमिसाल तरीके से पेश किया है। प्रभा दीक्षित अपनी पुस्तक 'साम्प्रदायिकता का ऐतिहासिक संदर्भ' में मुस्लिम समाज की बनावट का विश्लेषण करती कहती है कि मध्यकालीन भारतीय मुस्लिम समाज में तीन मुस्लिम वर्ग पाए जाते थे। अभिजात वर्ग के मुसलमानों का साधारण वर्ग के मुसलमानों की संस्कृति से कुछ लेना–देना नहीं होता था।[2] यही तीसरा साधारण वर्ग विभाजनोपूर्व और विभाजनोपरान्त साम्प्रदायिकता का शिकार अधिक होता रहा है। इसी वर्ग का सदस्य छाको इलाही मास्टर के धोखे या झांसे में आ कर पाकिस्तान जाने का फार्म भर देता है। छाको के ऐसा करने पर पैरी छाको के पैर पकड़ कर रोती हुई कहती है, ''मत जा बेटा। ईहें रह बप्पा– भैया के पास। काहेला जैबे परदेश''।[3] इन शब्दों का छाको पर जरा भी असर नहीं होता हैं। छाको की बेवा


Copyright ⓒ 2020 Authors

बहन अपने अन्तर्द्वन्द्व को व्यक्त करती कहती है, ''छाको का अक्कल देखला खाज़े बाबू! बप्पा, भइवा, बहिनिया सब तो हियाँ हाथिन। अप्पन चल गेलई पाकिस्तान। हमीं सब का नसीब खराब बाबू''।[4] जैनब भी अपने भाई के पाकिस्तान चले जाने पर पीड़ित अन्तर्द्वन्द्व के यथार्थ से जूझने लग जाती है। भाई की जुदाई की पीड़ा बेवा बहन, छाको की बेटी से भी छिपा लेती है। चाहकर भी जैनब भाई को इलाही मास्टर के झांसे से बाहर नहीं निकाल सकी। उपन्यासकार ने यहां पर सहधर्मिओं के धार्मिक गलत प्रचार का खुलकर खुलासा किया है। धर्म के नाम पर गलत प्रचार ने अनेक ना समझ मासूमों को धर्म के चंगुल में फसा दिया। जिसका प्रमाण उपन्यासकार ने छाको के माध्यम से प्रस्तुत किया है। छाको अपने अरमानों के देश पाकिस्तान पहुँच कर अपने सहधर्मिओं के बीच रह कर भी सब कुछ नहीं पा सका, जिसकी उम्मीद लगा कर वह उस पार विस्थापित हुआ था। इस पार छाको की बेवा बहन जैनब उर्फ जनवा और छाको की बेटी कभी–कभार ऊब कर पीड़ित हो जाती क्योंकि छाको कहां है ? कैसा है ? इस बात का उन दोनों को पता ही नहीं चल पाया था। कभी–कभी छाको के खत कोडरमा, झुमरीतलैया, हज़ारीबाग, ढाका और फिर पाकिस्तान से आते रहे थे। खतों को पढ़ कर छाको के अन्तर्द्वन्द्व के संघर्ष का पीड़ित यथार्थ साफ–साफ महसूस किया जा सकता था। छाको के पत्रों को पढ़ कर मालूम पड़ता था कि उस पार के लोग ऊब और उकताहट में भटक रहे हैं। इस पार पीड़ित लोग महम्दू खलीफा हाज़ी अब्दुल करीम को कोसते हैं जो धन–दौलत का लालची गरीब लोगों को अपनी पुश्तैनी सरजमीं से उखाड़ कर उस पार ले गया था। लोग उसके इस साम्प्रदायिक नाटक का शिकार होकर अन्तर्द्वन्द्व से जूझते हैं। जैनब हाजी को बुरा भला बोलती कहती है, ''हाजी अब्दुल करीम को दोजख में साँप–बिच्छू काटेंगे''।[5] ऐसे शब्द कोई तभी मुँह निकालता है जब वह पात्र अन्तर्द्वन्द्व की पीड़ा से गुजर रहा हो। छाको के पाकिस्तान चले जाने पर स्वयं लेखक बदीउज्जमाँ को भी पीड़ा होती है। इस का कारण यह था कि लेखक के मोहल्ले से कोई भी जुलाहा, दर्जी, राज, मजदूर, कसाई और अहीर पाकिस्तान नहीं गया था। जब छाको का खत आता तो खत के हर लफ्ज़ से मासूमियत और लाचारी भरी मजबूरी का एहसास होता था। दूसरी तरफ छोटी अम्मा चीख कर पाकिस्तान जाने का विरोध करती कहती है, ''हमें पाकिस्तान–वाकिस्तान नहीं जाना है। हम क्यों अपना घर बार छोड़ कर परदेश जाएँ''।[6] छोटी अम्मा के मुँह से निकले ऐसे शब्द
 Copyright ⓒ 2020 Authors

उनका हिन्दुस्तान के प्रति देश प्रेम और पाकिस्तान के प्रति घृणा का जीवंत प्रमाण प्रस्तुत करते हैं। यही बयान छोटी अम्मा हैडॅ ऑफिस से आए अधिकारियों को देती है। उस पार गए, छाको का पाकिस्तान से जल्दी ही मोहभंग हो जाता है। हिन्दुस्तान से जन्नत की तलाश में निकले मुसलमानों के सपने पल में ही चूर–चूर हो जाते हैं। टूटे सपनों के यथार्थ से जूझते पात्र, अपने धर्म के लोगों के बीच पहुँच कर भी देशकाल, भाषा और संस्कृति के साथ जुड़ नहीं पाते क्योंकि पहले से ही यह बात तय थी कि जाहिल और गवाँर मुसलमान पाकिस्तान न ही जाएँ तो अच्छा होगा। पाकिस्तान का निर्माण तो पढ़े–लिखे अमीरों के लिए किया है न कि छाको जैसे अनपढ़, गरीब और गवॉर मुसलमानों के लिए। मुस्लिम लीग के सदस्य यह चाहते थे कि पढ़े–लिखे मुसलमान ही वहां जाने चाहिए।[7] ऐसे वाक्यांश उस पार विस्थापित हुए पात्रों के अन्तर्द्वन्द्व को और अधिक प्रभावित कर देते हैं। बिहार और बंगाल से गए, मुसलमानों को पाकिस्तान में अधिक प्रताड़ना झेलनी पड़ी थी। सभी पात्र तद्‌युगीन परिदृश्य से जुड़ नहीं पाते हैं। हिन्दुस्तान की यादें उनको हमेशा उत्पीड़ित करती रहती हैं। ऐसी परिस्थितियों को समझ कर प्रो० गोपाल राय लिखते है कि छाको की वापसी उपन्यास में देश के विभाजन के बाद बिहार से पूर्वी और पश्चिमी पाकिस्तान गए, मुसलमानों के मोहभंग का अनुभूतिपूर्ण अंकन किया गया है। बिहार के मुसलमान पूर्वी पाकिस्तान पहुँच कर न तो वहाँ की जमीन, भाषा और संस्कृति से जुड़ पाते हैं और न ही कट पाते हैं। अपने वतन के प्यार की कीमत उन्हें पराये मुल्क में जा कर मालूम होती है।[8] इस उपन्यास के पात्र अपनी पुरानी ढर्रा जो बाप दादा के जमाने से चली आ रही है से कट नहीं पात और न ही भावी पीढ़ी को सौपने में सफल हो पाए हैं। इस उपन्यास का पात्र रामधनी अपनी दिनचर्या ही अपने पुराने काम धन्धे से शुरू करता है। रामधनी अपने सभी साथियों के साथ पाकिस्तान चले जाने पर प्रताड़ना भी झेलता है। न समझ रामधनी के अनुसार विभाजनोपरान्त पाकिस्तान जाने का मतलब आज भी वैसा ही है जैसे कलकत्ता से बुम्बई जाना। साम्प्रदायिकता फैला रहे उपद्रवी रामधनी को मारने की धमकी भरी योजनाएँ तैयार कर लेते हैं। यह सब जान कर रामधनी को अन्तर्द्वन्द्व भरी पीड़ा से जूझना पड़ता है। इसी उपन्यास का एक अन्य पात्र है, 'ढल्लन सिंह'। ढल्लन सिंह अपने धर्म को मोहब्बत के लिए कुर्बान कर धर्म बदल कर मुसलमान बन जाता है। मुसलमान बन जाने के बाद भी उसकी स्थिति मोहल्ले के आम मुसलमानों से अलग थी। लोग ढल्लन

 Copyright ⓒ 2020 Authors

सिंह को न तो पूरा सिक्ख और न ही पूरा मुसलमान स्वीकार करते थे। ढल्लन सिंह को कई बार वाहियात बातें भी सुननी पड़ती थी। ऐसी ही स्थिति पाकिस्तान में सैयद मुसलमान छाको की थी। छाको के सामने यह एक ऐसा अन्तर्द्वन्द्व था, जिसकी समझ छाको को नहीं आ रही थी। छाको का मानना था कि आदमी की असली बड़ाई तो उसके अमल में है। अच्छे काम करने से ही इन्सान अच्छा माना जाता है। छाको पाकिस्तान पहुँच कर अच्छे काम करता भी अपने अतीत से कट नहीं पाता, भादो में ख्वाज़ा ख़िजर के फातिहा की याद आती है। हिन्दुस्तान में ख्वाज़ा ख़िजर का फातिहा मुसलमान ही नहीं हिन्दू मल्लाह और धोबी भी यह फातिहा करते थे।[9] छाको को पाकिस्तान में इस पर्व को मनाने का अवसर ही नहीं मिल पाया। छाको के पाकिस्तान चले जाने पर अब्बा भी अन्तर्विरोध से जूझने लगता है। पीड़ित अवस्था में कई बार तो अब्बा का दिमाग सातवें आसमान पर पहुँच जाता था। महम्दू खलीफा को अपने साले की आदतें और हरकतें बिल्कुल पसन्द नहीं थी। इस का कारण यह था कि साहेबजान पूरे मुहल्ले भर में बदनाम था। बदमाशी और गुंडागर्दी की उसने धाक जमा रखी थी। महम्दू खलीफा ने दुखी होकर अपने बीवी–बच्चों से कह रखा था, ''खबरदार जो ऊब्ज्जात के पास कोई जाए। ऊ ई घर पाँव रखताई कभी तो तंगड़ी चीर दबई''।[10] साहेबजान के व्यक्तित्व में सिगरेट पीना, शराब पीना, गंदी गालियां बकना और जेब काटना जैसी सभी बुराइयाँ पाई जाती थी। साहेबजान की बुरी आदतें देख कर अम्मा ठंडी साँस लेकर कहती है, ''आज फिर मार खाइस है, कमबख्त काहे को ऐसा काम करे है ई। कैसा ढीठ है ई जो इत्ता मार खाता है तो भी ना छोड़े है चोरी करे को''।[11] यहां अम्मा अपने बेटे के दुष्कर्मों के कारण अन्तर्द्वन्द्व से पीड़ित देखी जा सकती है। इस उपन्यास का पात्र फरजंद दादा भी अंग्रेजी लिबासों और अंग्रेजी ढंग के रहन–सहन से भारी नफरत करता है। दादा जी ने अपने तमाम कीमती अंग्रेजी लिबासों पर मिट्टी का तेल छिड़क कर आग लगा कर ही अपने अन्तर्द्वन्द्व को शान्त किया। फरजंद दादा का विदेशी लिबासों को जलाना और स्वदेशी को बढ़ावा देना बताता है कि कैसे कोई भीतर के तनाव को कम करने के लिए, प्यार से खरीदी या भेंट हुई वस्तुओं को आग के हवाले कर देता है। हबीब भाई और गांधी भाई राजनैतिक मुद्दों को लेकर एक दूसरे पर व्यंग्यात्मक प्रहार करते कहते है, ''अच्छा तो महात्मा गांधी यहाँ तशरीफ रखते है। हॉ भाई, आप क्यों मुसलमानों के जलसे में शरीक होंगे ? हिन्दुओं की सभा

 Copyright ⓒ 2020 Authors

होती तो सर के बल चल कर वहाँ पहुँचते''।[12] सभी औपन्यासिक पात्र सियासतदानों की सियासतबाजी का आखेट बन कर विभाजनोपरान्त अन्तर्द्वन्द्व के यथार्थ से जूझते साफ–साफ नज़र आते हैं। वास्तविकता तो इस बात में है कि सियासत उन लोगों के लिए ठीक होती है, जिन का पेट भरा हो। भूखें–नगें और गरीबों को तो पेट भरने और शरीर ढकने का प्रबन्ध करने की चिन्ता लगी रहती है। सियासत तो ऐसे पीड़ित पात्र कर ही नहीं पाते है। सियासत ने हिन्दुओं और मुसलमानों में अलगाववादी भावना पूरी तरह से भर डाली थी। उस पार छाको अपने धर्म के लोगों के बीच अपने आप को ठगा–सा और पराया–सा महसूस करता है। मुहर्रम के समय ताजिया निकाला जाता है। छाको, जैनब उर्फ जरवा अपनी बेवा बहन से अखाड़े की सारी जानकारी खत के माध्यम से माँगता कहता है, ''मुहर्रम का अखाड़ा कैसा निकला, लिखियों। कै मेर बाजा था। इब्राहीम उस्ताद आ गये होंगे मुहर्रम करने वास्ते। बत्ती वाले कित्ते थे। रोशनी का फाटक था या नहीं ? शहर में हमारे अखाड़े का पहला नम्बर रहा या नहीं ? सब बात लिखिएगा। हमारी तरफ से मुहर्रम का चंदा दे दिया होगा। हमारा दिल तड़पता है। हम भी आते। अखाड़े के साथ रहते लेकिन मजबूर है। अल्लाह को मंजूर नहीं कि हम आएं। सबको सलाम दुआ''।[13] छाको जैसा पात्र पाकिस्तान में पहुँच कर मुहर्रम पर ताजिया निकलने के विषय पर पीड़ा झेलता हुआ, अपने अतीत से कट नहीं पाता है। छाको की ऐसी मनोदशा को देख कर डॉ० सतीश कुमार लिखते है, ''फ्लेश–बैक शैली के माध्यम से लेखक अतीत की स्मृतियों में भटकता है। छाको के प्रत्येक पत्र के साथ अतीत की परिवेशगत बनावट और सघन होकर फ्लेश होती है''।[14] मनुष्य अत्यधिक खुश होकर केवल सुखात्मक अनुभूति के अतिरिक्त जीवन का असल यथार्थ भी भूल जाता है। दु:खों, विषादों और विपरीत परिस्थितियों में फस कर मनुष्य को सत्य का साक्षात्कार होता है। वह अपने आप को यथार्थ के पथरीले धरातल पर पा कर अतीत की बातें याद कर पीड़ित होता है। समझने की बात यह है कि छाको जैसे पात्र को पाकिस्तान जा कर भी पीड़ा क्यों झेलनी पड़ी? वह अपनी मूल संस्कृति से क्यों नहीं कट पाए ? इस का कारण छाको का देश प्रेम और अपने परिजनों से बिछुड़ने का दर्द और अस्तित्व की तलाश था। छाको की स्थिति में मानसिक द्वन्द्व साफ–साफ महसूस होता है। छाको आज भी अपनी मातृभूमि की मिट्टी से जुड़ा हुआ है। पैसा, यंश और उन्नति छाको को मूल संस्कृति से तोड़ नहीं पाती। छाको यही सोचता है, ''ऐसी तरक्की किस काम
 Copyright ⓒ 2020 Authors

की जिस कारण आदमी को अपना देश और घर–बार छोड़ना पड़े। जंगल में मोर नाच किसने देखा। ना भाई ऐसे दो पैसों से घर का एक पैसा ही भला। भाड़ में जाये ऐसी तरक्की''।[15] विभाजनोपरान्त पाकिस्तान में विस्थापित होने की इच्छा तो मुसलमानों की खुद की थी। मुसलमानों के मस्तिष्क में उन्नति और असुरक्षा की भावना पैदा हो चुकी थी। भविष्य के गर्भ में उज्ज्वल भविष्य के सपने किलकारियाँ मारते सभी मुसलमानों को पाकिस्तान में नज़र आ रहे थे। तभी तो छाको जैसे पात्र उस पार अपने हमसायों को छोड़कर जन्नत की तलाश पर निकल पड़े थे। उनको क्या मालूम था कि हिन्दुस्तान से विस्थापित हुए, बंगाली और बिहारी मुसलमानों को दोयम दर्जे का नागरिक समझा जाएगा। उचित व्यवहार और समान अधिकारों से वंचित रखा जाएगा। भेद–भाव और अजनबीपन उनको मुहाजिर बना डालेगा। मुहाजिर और पनाहगीर की संज्ञा उनको हमेशा बेगानेपन का अहसास करवाती रहेगी। इस पहलू पर प्रो० गोपाल राय का विचार है कि बंगाली और बिहारी मुसलमान का भेद–भाव उन्हें वहाँ अजरबी बना देगा। कुछ ही दिनों में ये मुहाजिर भारत में छूट गए, सगे–सम्बन्धियों के साथ जीने के लिए छटपटाते, तड़पते और सिर धुनने लगेंगे।[16] ऐसा ही हुआ छाको जैसे अनेक पात्र देखा–देखी के बहकावे में फस कर या इस्लामी मज़हब और समान संस्कृति वाले नवनिर्मित पाकिस्तान में जन्नत के आकर्षण में आकर पाकिस्तान की ओर बिना सोचे विचारे भागने लगे थे। डॉ० मुहम्मद फ़ीरोज़ खान का मानना है, ''बदीउज्जमाँ ने विभाजित भारत की मनोदशा का बड़े ही स्वाभाविक एवं सुन्दर ढंग से चित्रण किया है। जहाँ एक ओर अर्थ, यश एवं सुरक्षा के मोह को लेकर पाकिस्तान के प्रति आकर्षण मुसलमानों के मस्तिष्क में पल रहा था, वहीं दूसरी ओर देश प्रेम हृदय में हिलोरे ले रहा था। उपन्यासकार ने तत्कालीन मानसिक स्थिति को पारखी एवं संवेदनशील मनश्चेतना द्वारा अनुभव किया है और उसे पात्रों के माध्यम से प्रश्नवाचक शैली में व्यक्त किया है। अनुभूति की गहनता एवं तीव्रता उपन्यासकार के उपन्यास की सफलता का आधार बनी है।[17] बदीउज्ज्माँ ने भारत छोड़ कर पाकिस्तान जाने वाले पात्रों का चित्रण बड़े ही मार्मिक ढंग से किया है। ऐसे ही पात्र रूपी लोग बड़ी खुशी से अपने घर को अपने बाप–दादा की जमीन को छोड़ कर जा रहे थे। इन में से किसी को भी जाते समय अपने फैसले पर रत्ती भर भी पश्चाताप या ग्लानि नहीं थी। गांधी भाई को इन्हें उस पार जाता देख कर खुशी नहीं हो रही थी। गांधी भाई के चेहरे पर गहरी उदासी छाई हुई थी।

 Copyright ⓒ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-1 No. 3 January–December 2020

पीड़ित होकर गांधी भाई कहते है, ''इन्हें वतन कभी नसीब नहीं होगा। बनी इसराईल की तरह ये भटकते रहेंगे और अपनी मिट्टी और हवाओं के लिए तरसते रहेंगे''।[18] गांधी भाई की ऐसी भविष्यवानी छाको की छटपटाहट को देख कर सत्य हुई नज़र आती है, जिस समय इस पार से उस पार गए पात्रों से मुहाजिर और पनाहगीर होने पर बेगानों जैसा व्यवहार होता महसूस होने लगा था। छाको जैसे पात्र को पराएपन का अहसास विवश कर देता है। लगातार उत्पन्न हो रही विकृतियाँ मुसलमानों को हिन्दुओं से दूर ले जा रही थी। इस पार से उस पार गए पीड़ितों को उत्पन्न परिस्थितियाँ विस्थापित नहीं होने दे रही थी। तभी तो छाको जैसा पात्र घर वापसी की लगातार गोहार लगा रहा है। समीक्षाकार नामदेव भी बदीउज्जमाँ के उपन्यास 'छाको की वापसी' में पाकिस्तान निर्माण के पीछे मुसलमानों की सामाजिक और आर्थिक सुरक्षा को मुख्य कारण के रूप में देखते है। पाकिस्तान की परिकल्पना और उसके विरोध को हबीब भाई और गांधी भाई के बीच की बहस जीवंत कर देती है। पात्रों के अन्तर्द्वन्द्व की पीड़ा का अहसास अपने आप होने लगता है।[19] छाको पाकिस्तान से हिन्दुस्तान आते ही खाज़े–बाबू को मिलने जाता है। छाको झिझकते–झिझकते लेखक से अपनी दुविधा का समाधान पूछता है, ''एक बात बतलाइये बाबू ? आप मंसिफ हैं। कानून पढ़े हुए हैं। का हम हिन्दुस्तान ना रह सक ही''?[20] इन शब्दों से स्पष्ट है कि अब्दूश्शकूर उर्फ छाको घर वापसी के लिए कैसे छटपटा रहा है। खाज़े बाबू छाको को कहते है कि अब ऐसा नहीं हो सकता क्योंकि अब तुम पाकिस्तान के नागरिक हो। तुम्हारा मुल्क पाकिस्तान ही है।[21] छाको की घर वापसी के रास्ते मे अन्तर–राष्ट्रीय कानून आकर खड़ा होता है। इस कानून के अनुसार छाको चाह कर भी घर वापसी नहीं कर सकता। जब भी छाको भारत आना चाहे केवल वीजा लेकर ही हिन्दुस्तान आ सकता है। बिना वीजा के छाको हिन्दुस्तान की धरा पर कदम भी नहीं रख सकता क्योंकि छाको इस समय हिन्दुस्तान का नहीं पाकिस्तान का नागरिक बन चुका है। यह बात सुनते ही छाको के चेहरे का रंग उड़ जाता है। छाको के हृदय में सुलग रही आग और अधिक तीव्र हो जाती है। चेहरे पर चिन्ता, लाचारी, परेशानी और तकलीफ की छाया का स्पष्ट अहसास होने लगता है। यह सब देख खाज़े–बाबू के दिल से भी एक टीस सी निकलती है। बेबस होकर छाको चीख–चीख कर इलाही मास्टर पर दोष लगाता कहता है, ''सच मानिये बाबू! इलाही मास्टर धोखा किहिन हमारे साथ। हम कभी ना चाहा था पाकिस्तान जाए को''।[22] इसी


Copyright ⓒ 2020 Authors

समय छाको को इलाही मास्टर से ठगे जाने का अहसास भी होता है। इलाही मास्टर का धोखाधड़ी करना, छाको को प्रताड़ित करता है। वीजा खत्म होने पर हर हालात में छाको को पाकिस्तान वापस जाना ही पड़ेगा। छाको अपने अन्तर्द्वन्द्व की ग्लानि को पुलिस वालों के समक्ष व्यक्त करता है, ''हमको यहीं रहने दीजिए हुजूर! वहाँ मत भेजिए हमको। हम मर जाएँगे हुजूर लेकिन वहाँ नहीं जाएँगे''।[23] छाको भी भारत सरकार पुनर्वास मंत्रालय वर्ष 1951 की रिपोर्ट के मुताबिक बटॅवारा पीड़ित हिन्दुओं की भान्ति विभाजनोपरान्त विस्थापन के लिए अपना सब कुछ छोड़–छाड़ कर इस पार से उस पार विस्थापित हुआ था। जैसे 1.25 करोड़ हिन्दू अपना घर–बार छोड़ कर उस पार से इस पार 160 रिफ्यूजी कैंपों में विस्थापित हुए थे।[24] यह लोग चाह कर भी अन्तर–राष्ट्रीय कानून के अनुसार घर वापसी नहीं कर सकते थे। इस लिए वीजा समाप्त होने पर छाको का वापस जाना ही उचित था, नही ंतो कानून का उल्लंघन करने पर छाको को जेल हो जाएँगी। छाको असहाय होकर, उदास चेहरा आँसुओं से सूखी आँखें लेकर महम्दू ख़लीफ़ा, जनवा और उसके बच्चों, अपनी जवान बेटी को छोड़ कर चला जाता है। बदीउज्ज्माँ को पचीस वर्षों के पश्चात फिर से वही पुराना चेहरा नज़र आता है। छाको फिर से वही पुराने वाक्यांश को दोहराता है। यहां पर बदीउज्ज्माँ ने छाको के माध्यम से अन्तर्द्वन्द्व से जूझते पात्रों के यथार्थपरक को सूक्ष्मता से गहन करने के बाद ही चित्रण किया हैं। यहां पर लेखक ने विस्थापन की पीड़ा भोगते छाको जैसे पात्रों की तनावग्रस्त मनःस्थिति को दर्शाया है। इस पात्र को केंद्रबिन्दू में रख कर खाज़े बाबू ने असमंजस की स्थिति में पड़े उस पार के मुसलमानों का बाखूबी से अकंन किया हैं। प्रत्यक्ष और संजीव उदाहरण की प्रामाणिकता एक संवेदनशील आत्मा को भेद कर रख देती है। अन्त में अन्तर्द्वन्द्व से जूझता छाको मरने–मारने का निर्णय कर कहता है, ''जेहर दे दो, चाहे फाँसी, हम तो छोड़ के न जैबई, अपन घरवा''।[25] छाको के समान सिनेमा जगत की अदाकारा कामिनी कौशल भी अपने 94वें जन्मदिवस पर दैनिक भास्कर दैनिक समाचार पत्र से भेंट वार्तालाप के दौरान लाहौर में अपना स्वर्ग सा घर याद कर पीड़ित होती हैं। कामिनी कौशल के घर जाने वाली सड़क तक को विकास के नाम पर तोड़ दिया गया था। घर तोड़ कर वहां शॉपिंग मॉल बना दिया गया है।[26] कामिनी कौशल भी छाको की तरह अपनी पुश्तैनी धरा को देखने के लिए विवशता जाहिर करती हैं परन्तु अब कुछ भी नहीं हो सकता है। कामिनी

 Copyright ⓒ 2020 Authors

 ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-1 No. 3 January–December 2020

कौशल भी घर वापसी नहीं कर सकती है। मनुष्य की रागात्मक संवेदना, भारतीय समाज के प्रति लगाव, मोहभंग होने की स्थिति, अपनी सभ्यता संस्कृति से न कट पाना, वर्तमान परिस्थितियों से प्रभावित होना, अल्पसंख्सकों पर अत्याचार और उनको दोयम दर्जे का मान–सम्मान मिलना।[27] छाको जैसे पात्र घर वापसी के लिए विवशता जाहिर करते हैं। विभाजन के क्षोभ ने न केवल एक कड़वाहट को ही जन्म दिया बल्कि राष्ट्रीय सीमा रेखा के साथ मुसलमानों की देश भक्ति पर भी आशंका पैदा कर डाली है।[28] भारत सरकार को भी संशय करने पर मजबूर कर दिया है। फलस्वरूप पात्रों से जुड़ी आत्मीयता, संवेदना तथा अपनत्व पर प्रश्न चिन्ह खड़े कर आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक विषमताएँ उत्पन्न कर डाली हैं। मुस्लिम समाज से जुड़ी नयी परिस्थितियों और प्रवृत्तियों से विकृतियाँ उत्पन्न हो गई हैं। मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों और सहानुभूति जैसे पहलुओं पर गूढ़ रहस्यों ने अपनी काली छाया कायम कर ली है। आज भी छाको जैसे अनेक पात्र दुनिया के किसी–न–किसी हिस्से में पड़े घर वापसी के लिए तड़प रहे हैं परन्तु सियासतदानों की चालबाजी और राजनैतिक षयड़त्रों के कारण घर वापसी नहीं कर सकते हैं। शायद, सियासतदानों को उनकी घर वापसी का रास्ता खोलने के लिए बहुत बड़ी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा हैं। सियासतदानों को पूरी ताकत लगाकर ऐसे पात्रों की घर वापसी का रास्ता खोलना चाहिए।

**निष्कर्ष :–** 'छाको' जैसे पात्रों की प्रताड़ना का मुख्य कारण मुसलमानों में विभाजनोपरान्त असुरक्षा, भय, विवशता और अल्पसंख्यक वर्ग से सम्बन्धित होने की भावना है। राजनैतिक चेतना, अनपढ़ता, गरीबी और पिछड़ेपन के कारण मुस्लिम लीग द्वारा आम मुसलमानों का मुसलमान होने पर उनका मजहब के नाम पर गलत उपयोग किया गया। जैसे संभ्रांत मुस्लिम वर्ग का प्रतिनिधि बन कर हबीब भाई इस्लाम के नाम पर और इलाही मास्टर काम–धन्धों के नाम पर भोले–भाले मुसलमानों को पीछे लगा कर पाकिस्तान का निर्माण करवा कर फायदा अभिजात वर्ग को या खुद को पहुँचाता है। यह खोज़–पत्र बताता है कि अमीर वर्ग तो सियासतदान बन कर सियासत करने लगा परन्तु छाको जैसे पात्र मात्र धोबी का कुत्ता बन कर रह गए। जो नागरिकता के नाम पर दोयम दर्जे के नागरिक बन कर न घर के रहे न घाट के। आज भी न जाने छाको जैसे कितने पात्र हिन्दुस्तान घर वापसी करना चाहते हैं पर

 Copyright ⓒ 2020 Authors

ISSN: 2278-4632
Vol-10 Issue-1 No. 3 January–December 2020

कर नहीं पा रहे क्योंकि अन्तर–राष्ट्रीय कानून और सियासत का दबाव उनको ऐसा करने की आज्ञा नहीं देता है। सरकारे विवशता का बहाना बनाकर सियासी माहौल गर्मा कर अपना स्वार्थ सिद्ध करने में लगी हुई हैं, न जाने सियासत का भूत पहले कितनो को अपना निवाला बना चुका है और अभी कितनो को बनाना बाकी है। हां, एक रास्ता है अगर हम सभी इन्सान बन कर धर्म को अलग कर वसुधैवकुटुम्बकम का प्रमाण देकर हिन्दु और मुसलमान मिलकर एक हो जाए तो मुखौटेबाजों को सबक सिखाया जा सकता है। धर्म का काम मानव को मानव से जोड़ना है, तोड़ना नहीं है। धर्म के नाम पर मानवता और इन्सानियत का हनन होने पर मानवता और इन्सानियत की रक्षा हेतु भगवान श्रीकृष्ण जी ने भी शस्त्र उठाने की आज्ञा दी है। 'छाको' जैसे पात्रों को सियासी चालबाजों के चंगुलों से बचाना भी हमीं का दायित्व बनता है। अगर हम अपना दायित्व निभाने में सफल हो गए तो हमारी भावी पीढ़ियाँ हमें शर्मसार करने, कोसने और गालियाँ देने से गुरेज़ करेंगी। इस खोज़–पत्र के माध्यम से मैं सभी को इन्सान बन कर, इन्सानियत का धर्म निभाने का अहवान करता हूँ। हमें अपने गुरुओं पीरों, फकीरों और सन्तों के आदेशों का पालन कर सर्व हितेषी कार्य कर '**अहिंसा परमों धर्मः**' का पालन करना चाहिए। यही मेरे शोध–पत्र का ध्येय है कि छाको जैसे पात्रों की पीड़ा को समझ कर उनके घर वापसी का रास्ता खोजा कर उनको पुनः हिन्दुस्तान की सरजमी पर विस्थापित किया जा सके।

**संदर्भ :–**

1 आचार्य राम चन्द्र वर्मा, ''लोक भारती प्रामाणिक हिन्दी शब्द कोश'' लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण–1998 पृष्ठ संख्या–4
2 प्रभा दीक्षित, ''सांप्रदायिकता का ऐतिहासिक संदर्भ'' द मैकमिलन कंपनी ऑफ इंडिया लिमिटेड, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–1980 पृष्ठ संख्या–9
3 बदीउज्जमाँ, ''छाको की वापसी'' राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–1975 पृष्ठ संख्या–15
4 वही पृष्ठ संख्या–79
5 वही पृष्ठ संख्या–16
6 वही पृष्ठ संख्या–19
7 वही पृष्ठ संख्या–24
8 डॉ० गोपाल राय, ''हिन्दी उपन्यास का इतिहास'' राजकमल प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण–2010 पृष्ठ संख्या–344


Copyright ⓒ 2020 Authors

9 बदीउज्जमाँ, ''छाको की वापसी'' राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–1975 पृष्ठ संख्या–44
10 वही पृष्ठ संख्या–58
11 वही पृष्ठ संख्या–60
12 वही पृष्ठ संख्या–91
13 वही पृष्ठ संख्या–105
14 डॉ० सतीश कुमार, ''साम्प्रदायिकता का दंश और छाको की वापसी'' International journal of Advanced Research and Development volume-2 Isssue-6, November 2017 page no 854
15 बदीउज्जमाँ, ''छाको की वापसी'' राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–1975 पृष्ठ संख्या–86
16 डॉ० गोपाल राय, ''हिन्दी उपन्यास का इतिहास'' राजकमल प्रकाशन, इलाहाबाद, संस्करण–2010 पृष्ठ संख्या–445
17 डॉ० मोहम्मद फ़ीरोज़ खान, ''मुस्लिम मानस और हिन्दी उपन्यास'' अनंग प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–2003 पृष्ठ संख्या–143
18 बदीउज्जमाँ, ''छाको की वापसी'' राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–1975 पृष्ठ संख्या–44
19 नाकदेव, ''भारतीय मुसलमान हिन्दी उपन्यासों के आईने में'' अनामिका पब्लिशस एड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रा. लि. नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–2009 पृष्ठ संख्या–76
20 बदीउज्जमाँ, ''छाको की वापसी'' राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–1975 पृष्ठ संख्या–169
21 वही पृष्ठ संख्या–170
22 वही पृष्ठ संख्या–169
23 वही पृष्ठ संख्या–170
24 वही पृष्ठ संख्या–186
25 M.S Randhawa, “Out of Ashes” S. Ujjal Singh C.V. Raman at new Jack Printing Bombay,Edition-1954 page no.32
26 दैनिक समाचार पत्र, ''दैनिक भास्कर'' मंगलवार, 25 फरवरी 2020 पृश्ठ संख्या–9
27 आशुतोष भटनागर, 'नागरिकता संशोधन कानून–2019 तत्थ एवं वास्तविकता' विर्मश प्रकाशन झण्डेवाला, नयी दिल्ली प्रथम संस्करण–2020 पृष्ठ संख्या–39
28 डॉ० मोहम्मद फ़ीरोज़ खान, ''मुस्लिम मानस और हिन्दी उपन्यास'' अनंग प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण–2003 पृष्ठ संख्या–224


Copyright ⓒ 2020 Authors

Copyright ⓒ 2020 Authors